अध्याय 8: बिरजू महाराज से साक्षात्कार

विषय-सूची — 8 प्रश्नावली · 23 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	सोच-विचार के लिए	7 प्रश्न
प्रश्नावली 8.5	शब्दों की बात (उपसर्ग-प्रत्यय)	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.6	शब्दों का प्रभाव	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.7	पाठ से आगे — कला का संसार	3 प्रश्न
प्रश्नावली 8.8	साक्षात्कार की रचना	3 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

बिरजू महाराज ने गंडा बाँधने की परंपरा में परिवर्तन क्यों किया होगा? • वे गुरु के प्रति शिष्य के निष्ठा भाव को परखना चाहते थे। • वे नृत्य शिक्षण के लिए इस परंपरा को महत्वपूर्ण नहीं मानते थे। • वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे। • वे शिष्य की भेंट देने की सामर्थ्य को परखना चाहते थे।

हल

बिरजू महाराज ने बताया कि उन्होंने गंडा बाँधने की परंपरा को उलट दिया — कई वर्षों तक नृत्य सिखाने के बाद जब देखते हैं कि शिष्य में सच्ची लगन है, तभी गंडा बाँधते हैं।

इस परिवर्तन का उद्देश्य भेंट-शुल्क की सामर्थ्य जाँचना नहीं, बल्कि शिष्य की नृत्य के प्रति सच्ची लगन और समर्पण को देखना है।

सही उत्तर: 'वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे।'

उत्तर: वे नृत्य के प्रति शिष्य के लगन व समर्पण भाव को जाँचना चाहते थे।

प्रश्न 2

"जीवन में उतार चढ़ाव तो होता ही है।" बिरजू महाराज के जीवन में किस तरह के उतार-चढ़ाव आए? • पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा। • कोई भी संस्था नृत्य प्रस्तुतियों के लिए आमंत्रित नहीं करती थी। • किसी समय विशेष में घर में सुख-समृद्धि थी। • नृत्य के औपचारिक प्रशिक्षण के अवसर बहुत ही सीमित हो गए थे।

हल

साक्षात्कार में बिरजू महाराज ने बताया कि एक समय वे 'छोटे नवाब' कहलाते थे और घर में संपन्नता थी — यह उनके जीवन का 'चढ़ाव' था।

बाबूजी (पिता अच्छन महाराज) के देहांत के बाद आर्थिक परेशानियाँ बढ़ने लगीं — डिब्बों में रखे हार खाली हो गए, कर्ज लेना पड़ा, पुरानी ज़री की साड़ियाँ जलाकर सोने-चाँदी के तार बेचने पड़े।

अतः सही उत्तर हैं: 'पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा' और 'किसी समय विशेष में घर में सुख-समृद्धि थी।'

ये दोनों कथन उनके जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाते हैं।

उत्तर: पिता के देहांत के बाद आर्थिक अभावों का सामना करना पड़ा; किसी समय विशेष में घर में सुख-समृद्धि थी।

प्रश्न 3

बिरजू महाराज के अनुसार बच्चों को लय के साथ खेलने की अनुशंसा क्यों की जानी चाहिए? • संगीत, नृत्य, नाटक और सभी कलाएँ बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास नहीं करती हैं। • कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। • कला भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। • वर्तमान समय में कला भी एक सफल माध्यम नहीं है।

हल

बिरजू महाराज ने अभिभावकों से कहा कि यदि बच्चे की रुचि है तो उसे लय के साथ खेलने दें।

उन्होंने कहा — 'जैसे अन्य खेल हैं वैसे ही यह भी एक खेल है, जिसमें बहुत-कुछ सीखने को मिलता है।'

इसके अलावा उन्होंने बताया कि 'इस खेल की दुनिया में संतुलन, समय का अंदाजा व सदुपयोग बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।'

सही उत्तर: 'कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है' और 'कला भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।'

उत्तर: कला संबंधी विषयों से जुड़ाव बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है; कला भी एक खेल है, जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

प्रश्नावली 8.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों को उनके सही संदर्भ या अवधारणाओं से मिलाइए: शब्द: 1. कर्नाटक संगीत शैली 2. घराना 3. शास्त्रीय संगीत 4. हिंदुस्तानी संगीत शैली 5. कनछेदन 6. लोक नृत्य संदर्भ या अवधारणा: 1. भारत की प्राचीन गायन-वादन गीत-नृत्य अभिनय परंपरा का अभिन्न अंग है। इसमें शब्दों की अपेक्षा सुरों का महत्व होता है। इसमें नियमों की प्रधानता होती है। 2. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत के राज्यों में प्रचलित है। इसमें स्वर शैली की प्रधानता होती है। जल तरंगम, वीणा, मृदंग, मंडोलिन वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है। 3. हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में एक है, यह कान में सोने या चाँदी का तार पहनाने से संबंधित है। 4. हिंदुस्तानी संगीत में कलाकारों का एक समुदाय या कुटुंब, जो संगीत नृत्य की विशिष्ट शैली साझा करते हैं। संगीत या नृत्य की परंपरा, जिसमें सिद्धांत और शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रशिक्षण के द्वारा आगे बढ़ती है। 5. किसी क्षेत्र विशेष में लोक द्वारा किए जाने वाले पारंपरिक नृत्य। लोक नृत्य, क्षेत्र विशेष की संस्कृति एवं रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं। ये विशेष रूप से फसल कटाई, उत्सवों आदि के अवसर पर किए जाते हैं। 6. भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक शैली, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत के राज्यों में प्रचलित है। तबला, सारंगी, सितार, संतूर वाद्ययंत्रों से संगत दी जाती है। इसके प्रमुख रागों की संख्या छह है।

हल

1. कर्नाटक संगीत शैली → 2 (दक्षिण भारत में प्रचलित, स्वर शैली की प्रधानता, जल तरंगम/वीणा/मृदंग/मंडोलिन से संगत)
2. घराना → 4 (हिंदुस्तानी संगीत में कलाकारों का समुदाय/कुटुंब, विशिष्ट शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती है)
3. शास्त्रीय संगीत → 1 (भारत की प्राचीन गायन-वादन परंपरा, शब्दों से अधिक सुरों का महत्व, नियमों की प्रधानता)
4. हिंदुस्तानी संगीत शैली → 6 (उत्तर भारत में प्रचलित, तबला/सारंगी/सितार/संतूर से संगत, छह प्रमुख राग)
5. कनछेदन → 3 (हिंदू धर्म के 16 संस्कारों में एक, कान में सोने या चाँदी का तार पहनाना)
6. लोक नृत्य → 5 (किसी क्षेत्र विशेष में पारंपरिक नृत्य, क्षेत्र की संस्कृति दर्शाता है, फसल कटाई/उत्सव पर किया जाता है)

उत्तर: 1→2, 2→4, 3→1, 4→6, 5→3, 6→5

प्रश्नावली 8.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

"तुम नौकरी में बँट जाओगे। तुम्हारे अंदर का नर्तक पूरी तरह पनप नहीं पाएगा।" — इस कथन का क्या अर्थ है? अपने विचार लिखिए।

हल

यह कथन बिरजू महाराज के चाचा ने उन्हें तब कहा जब महाराज ने नौकरी शुरू की थी।
चाचा का आशय था कि नौकरी का बंधन और उसकी माँगें इतनी होती हैं कि व्यक्ति का ध्यान और समय दो भागों में बँट जाता है।
जो कलाकार संपूर्ण एकाग्रता और साधना से नृत्य में समर्पित रहता है, वही 'महाराज' की ऊँचाई तक पहुँच सकता है।
नौकरी करते हुए नृत्य-साधना को वह पूर्ण गहराई और समय नहीं मिलता जो एक उच्च कोटि का कलाकार बनने के लिए चाहिए।
बिरजू महाराज ने दृढ़ निश्चय किया था कि 'महाराज' बनना है तो उसके लिए मेहनत भी करनी होगी — अर्थात् उन्होंने कला को सर्वोपरि रखा।

उत्तर: नौकरी और कला दोनों साथ होने पर ध्यान बँट जाता है; संपूर्ण समर्पण के बिना कलाकार अपनी पूरी प्रतिभा नहीं निखार सकता।

प्रश्न 2

"नृत्य में शरीर, ध्यान और तपस्या का साधन होता है।" — इस कथन का क्या अर्थ है? अपने विचार लिखिए।

हल

बिरजू महाराज के अनुसार नृत्य केवल शारीरिक गतिविधि नहीं है।
'शरीर का साधन' — नृत्य के माध्यम से शरीर को अनुशासित किया जाता है, प्रत्येक अंग का पूर्ण नियंत्रण होता है।
'ध्यान का साधन' — नृत्य करते समय मन को पूरी तरह एकाग्र करना पड़ता है; बिरजू महाराज ने कहा — 'नृत्य करना एक तरह से अदृश्य शक्ति को निमंत्रण देना है।'
'तपस्या का साधन' — वर्षों की कठिन साधना, रियाज़ और अभ्यास से ही नृत्य में निपुणता आती है; यही तपस्या है।
इस प्रकार नृत्य शरीर, मन और आत्मा तीनों को साधने का माध्यम है।

उत्तर: नृत्य शरीर की गतिविधि, मन की एकाग्रता और वर्षों की कठिन साधना — तीनों का समन्वय है; यह केवल मनोरंजन नहीं, एक आध्यात्मिक साधना है।

प्रश्न 3

"कथक में गर्दन को हल्के से हिलाया जाता है, चिराग की लौ के समान।" — इस कथन का क्या अर्थ है? अपने विचार लिखिए।

हल

बिरजू महाराज ने कथक की सूक्ष्म गतिविधियों का वर्णन करते हुए यह कथन कहा।
दीपक की लौ बहुत कोमल और स्थिर होती है — वह हवा के हल्के स्पर्श से थोड़ी-सी हिलती है, लेकिन बुझती नहीं।
उसी प्रकार कथक में गर्दन की गति अत्यंत कोमल, संयत और नियंत्रित होती है — न बहुत तेज़, न रुकी हुई।
इसी प्रकार उँगलियाँ भी बहुत धीरे-से हिलाई जाती हैं — जैसे घूँघट पकड़ने में।
यह कथन कथक की परिष्कृत शैली को दर्शाता है — सूक्ष्म, कोमल और भावपूर्ण अभिव्यक्ति ही कथक की विशेषता है।

उत्तर: दीपक की लौ जैसी अत्यंत कोमल, संयत और नियंत्रित गर्दन की गति — यह कथक की परिष्कृत और सूक्ष्म अभिव्यक्ति शैली को दर्शाती है।

प्रश्नावली 8.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

बिरजू महाराज नृत्य का औपचारिक प्रशिक्षण आरंभ होने से पहले ही कथक कैसे सीख गए थे?

हल

बिरजू महाराज के घर में कथक का माहौल था — उनके पिता अच्छन महाराज और चाचा शंभू महाराज व लच्छू महाराज उनके गुरु थे।
घर में निरंतर कथक का अभ्यास होता था; महाराज इसे देख-देखकर सीखते रहे।
उन्होंने स्वयं बताया — 'घर में चूँकि कथक का माहौल था, अत: औपचारिक प्रशिक्षण शुरू होने से पहले ही मैं देख-देखकर कथक सीख गया था और नवाब के दरबार में नाचने भी लगा था।'
इस प्रकार पारिवारिक वातावरण और अनौपचारिक अवलोकन उनके प्रारंभिक सीखने का आधार था।

उत्तर: घर में कथक का माहौल था; पिता-चाचा को देख-देखकर औपचारिक प्रशिक्षण से पहले ही कथक सीख लिया और नवाब के दरबार में नाचने भी लगे।

प्रश्न 2

नृत्य सीखने के लिए संगीत की समझ होना क्यों अनिवार्य है?

हल

बिरजू महाराज ने बताया — 'गाना, बजाना और नाचना — ये तीनों संगीत का हिस्सा हैं।'
संगीत में लय होती है और उसका ज्ञान नृत्य के लिए आवश्यक है क्योंकि नृत्य लय पर ही आधारित है।
उन्होंने उदाहरण दिया — 'अगर नर्तक को सुर-ताल की समझ है तो वह जान पाएगा कि यह लहरा ठीक नहीं है, इसके माध्यम से नृत्य अंगों में प्रवेश नहीं करेगा।'
लय हर काम में, नृत्य में, जीवन में संतुलन बनाए रखती है — यह नृत्य को सुंदरता प्रदान करती है।
सुर-ताल की समझ के बिना नर्तक यह नहीं जान सकता कि संगत सही है या नहीं।

उत्तर: नृत्य लय पर आधारित है; सुर-ताल की समझ के बिना नर्तक संगत की गलती नहीं पकड़ सकता और नृत्य के अंगों में लय का प्रवेश नहीं हो पाता।

प्रश्न 3

नृत्य के अतिरिक्त बिरजू महाराज को और किन-किन कार्यों में रुचि थी?

हल

बिरजू महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। नृत्य के अतिरिक्त उनकी निम्नलिखित रुचियाँ थीं:
संगीत — वे नृत्य के साथ-साथ बजाते और गाते भी थे; उन्होंने नृत्य नाटिकाएँ और उनके लिए संगीत तैयार किया।
मशीनें और यंत्र — 'मशीनों में मन खूब लगता है'; वे ब्रीफकेस में पेचकस और औजार रखते थे तथा पंखा-फ्रिज स्वयं ठीक करते थे।
चित्रकारी — बेटी-दामाद को देख-देखकर पेंटिंग बनाने का शौक हो गया; रात बारह बजे के बाद चित्र बनाते थे

और पिछले दो वर्षों में लगभग सत्तर चित्र बनाए।
यदि नर्तक न होते तो वे इंजीनियर होते — यह उनकी वैज्ञानिक जिज्ञासा को दर्शाता है।

उत्तर: नृत्य के अतिरिक्त गायन, वादन, नृत्य-नाटिकाओं का संगीत-निर्माण, मशीनों की मरम्मत तथा चित्रकारी में उनकी विशेष रुचि थी।

प्रश्न 4

बिरजू महाराज ने बच्चों की शिक्षा और रुचियों के बारे में अभिभावकों से क्या कहा है?

हल

बिरजू महाराज ने अभिभावकों से आग्रह किया — 'यदि बच्चे की रुचि है तो उसे लय के साथ खेलने दें।'
उन्होंने संगीत और नृत्य को एक खेल की तरह देखने की बात कही जिसमें बहुत-कुछ सीखने को मिलता है।
उन्होंने बताया कि 'इस खेल की दुनिया में संतुलन, समय का अंदाजा व सदुपयोग बच्चे के बौद्धिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।'
उन्होंने बच्चों से भी कहा — 'तुम लोग संगीत सीखते हो? यदि नहीं तो ज़रूर सीखो। मन की शांति के लिए यह बहुत जरूरी है।'
लड़कियों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि लड़कियों के पास शिक्षा या कोई-न-कोई हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें।

उत्तर: यदि बच्चे की रुचि हो तो उसे संगीत-नृत्य खेलने दें; यह खेल संतुलन, एकाग्रता और बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत लाभकारी है।

प्रश्न 5

पाठ में से उन प्रसंगों की पहचानकर चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि बिरजू महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

हल

बिरजू महाराज की बहुमुखी प्रतिभा के प्रमाण:
नृत्य — कथक की सर्वोच्च ऊँचाइयों को छूने वाले शास्त्रीय नर्तक; नृत्य नाटिकाएँ बनाईं।
संगीत — नृत्य के साथ-साथ बजाना और गाना; पाँच वर्ष की आयु में हारमोनियम पर लहरा बजाना शुरू किया।
संगीत रचना — टैगोर, त्यागराज जैसे आधुनिक कवियों की रचनाओं पर कथक रचनाएँ तैयार कीं।
चित्रकारी — दो वर्षों में लगभग सत्तर चित्र बनाए।
यांत्रिकी — पंखा, फ्रिज आदि मशीनें स्वयं ठीक करते थे; ब्रीफकेस में औजार रखते थे।
शिक्षण — शोभना नारायण जैसी IAS अधिकारी को नृत्य की शिक्षा दी।

उत्तर: नृत्य, गायन, वादन, संगीत-रचना, चित्रकारी और यंत्र-मरम्मत — बिरजू महाराज में अनेक कलाओं और कौशलों का अद्भुत संगम था।

प्रश्न 6

पाठ में से उन प्रसंगों की पहचानकर चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि बिरजू महाराज को नृत्य की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उनकी माँ का बहुत योगदान रहा।

हल

बिरजू महाराज ने संघर्ष के दौर में अपनी माँ को 'सबसे बड़ी सहयोगी' बताया।
आर्थिक कठिनाइयों के समय माँ ने कभी कर्ज लिया, कभी पुरानी ज़री की साड़ियाँ जलाकर सोने-चाँदी के तार बेचे — इस प्रकार घर चलाया।
माँ बार-बार प्रेरित करती थीं — 'खाने को भले ही चना मिले या कुछ भी न मिले पर अभ्यास जरूर करो।'
जब तालीम शुरू होने की बात आई और बाबूजी ने भेंट पर शर्त रखी, तब अम्मा ने बिरजू के दो कार्यक्रमों की कमाई बाबूजी को भेंट के रूप में दे दी — इस प्रकार उनकी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।
माँ की यही लगन और बलिदान ने बिरजू महाराज को कथक की शिखर तक पहुँचाया।

उत्तर: आर्थिक संघर्ष में घर चलाने की व्यवस्था करना, 'अभ्यास जरूर करो' की प्रेरणा देना और अपनी कमाई से गंडा-भेंट चुकाना — माँ ने हर कदम पर सहारा दिया।

प्रश्न 7

पाठ में से उन प्रसंगों की पहचानकर चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि बिरजू महाराज महिलाओं के लिए समानता के पक्षधर थे।

हल

बिरजू महाराज ने स्वीकार किया कि उनकी बहनों को कथक नहीं सिखाया गया — यह परंपरागत असमानता थी।
किंतु उन्होंने अपनी बेटियों को खूब कथक सिखाया — इस प्रकार उन्होंने पुरानी परंपरा को बदला।
उन्होंने स्पष्ट कहा — 'लड़कियों के पास शिक्षा या कोई-न-कोई हुनर अवश्य होना चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें।'
उनकी शिष्या शोभना नारायण IAS अधिकारी थीं और वे एक अच्छी नर्तकी भी थीं — बिरजू महाराज ने इस उदाहरण को गर्व से प्रस्तुत किया।
इन सभी प्रसंगों से स्पष्ट है कि वे महिलाओं की शिक्षा, स्वावलंबन और कला में समान अधिकार के पक्षधर थे।

उत्तर: अपनी बेटियों को कथक सिखाया, महिला शिष्या IAS-नर्तकी पर गर्व किया, और 'हुनर = आत्मनिर्भरता' का संदेश देकर महिला-समानता का समर्थन किया।

प्रश्नावली 8.5 — शब्दों की बात (उपसर्ग-प्रत्यय)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए उपसर्गों और मूल शब्दों की सहायता से नए शब्द बनाइए: उपसर्ग/प्रत्यय: आ, सु, ईय, अ, इक, आ, ता, इत मूल शब्द: मर्म, राष्ट्र, गमन, खंड, श्रम, संस्कृति, कर्म, नाम, साधारण

हल

अ + खंड = अखंड (अखंडित भारत की एकता अनुकरणीय है।)
अ + गमन = आगमन (उपसर्ग 'आ' + गमन = आगमन — पधारने की क्रिया)
सु + नाम = सुनाम (सुनाम अर्जित करना कठिन परिश्रम माँगता है।)
राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय (भारतीय शास्त्रीय नृत्य राष्ट्रीय गौरव है।)
संस्कृति + इक = सांस्कृतिक (सांस्कृतिक विविधता भारत की पहचान है।)
श्रम + इत = श्रमित (कठिन अभ्यास से वह श्रमित हो गया।)
मर्म + ज्ञ = मर्मज्ञ (बिरजू महाराज कथक के मर्मज्ञ थे।)
साधारण + ता = साधारणता (महान कलाकार अपनी साधारणता से महान बनते हैं।)
कर्म + ईय = कार्मिक / सु + कर्म = सुकर्म (सुकर्म ही मनुष्य को महान बनाता है।)

उत्तर: अ+खंड=अखंड, आ+गमन=आगमन, सु+नाम=सुनाम, राष्ट्र+ईय=राष्ट्रीय, संस्कृति+इक=सांस्कृतिक, श्रम+इत=श्रमित, साधारण+ता=साधारणता

प्रश्न 2

इस पाठ में से उपसर्ग व प्रत्यय की सहायता से बने कुछ और शब्द छाँटकर उनसे वाक्य बनाइए।

हल

पाठ में से उपसर्ग/प्रत्यय-युक्त शब्द और वाक्य:
आजीविका (आ + जीविका): नृत्य ही बिरजू महाराज की आजीविका का साधन था।
प्रशिक्षण (प्र + शिक्षण): औपचारिक प्रशिक्षण से पहले ही उन्होंने कथक सीख लिया।
सुंदरता (सुंदर + ता): लय नृत्य को सुंदरता प्रदान करती है।
आधुनिक (आधुनिक — 'आ' उपसर्ग): आधुनिक कवियों की रचनाओं पर कथक रचनाएँ बनाई गईं।
पारंपरिक (परंपरा + इक): कथक की पारंपरिक शैली आज भी जीवित है।
भारतीय (भारत + ईय): भारतीय शास्त्रीय नृत्य विश्वविख्यात है।
सामूहिक (समूह + इक): लोक नृत्य सामूहिक रूप से किया जाता है।
शास्त्रीय (शास्त्र + ईय): कथक एक शास्त्रीय नृत्य विधा है।
अदृश्य (अ + दृश्य): बिरजू महाराज ने कहा — नृत्य अदृश्य शक्ति को निमंत्रण है।
आवरण (आ + वरण): लय एक तरह का आवरण है जो नृत्य को सुंदरता प्रदान करती है।

उत्तर: आजीविका, प्रशिक्षण, सुंदरता, आधुनिक, पारंपरिक, भारतीय, सामूहिक, शास्त्रीय, अदृश्य, आवरण — सभी उपसर्ग या प्रत्यय से बने शब्द हैं।

प्रश्नावली 8.6 — शब्दों का प्रभाव

प्रश्न 1

"कुछ कथक डर गए किंतु उन कथकों की कला में इतना दम था कि डाकू सब कुछ भूलकर उन कथकों के कथक में मगन हो गए।" — इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'इतना' हटाकर पढ़िए। क्या परिवर्तन आया? पाठ में से ऐसे ही कुछ और शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित कीजिए जिनके प्रयोग से वाक्य में विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है।

हल

'इतना' हटाने पर वाक्य बनता है: 'उन कथकों की कला में दम था।' — यह वाक्य सीधा तथ्य बताता है।
'इतना' जोड़ने पर वाक्य में कला की अद्भुत शक्ति का बोध होता है — डाकूओं का मगन होना इस शक्ति की असाधारणता को दर्शाता है।
इस प्रकार 'इतना' जैसे शब्द वाक्य में तीव्रता, विशेषता और भाव की गहराई उत्पन्न करते हैं।
पाठ में ऐसे अन्य प्रभावी शब्द:
'बहुत' — 'बहुत छुटपन से ही तबला पीटना शुरू कर दिया था।' (अत्यंत कम उम्र का बोध)
'बार-बार' — 'अम्मा बार-बार यही कहा करती थीं।' (निरंतरता और दृढ़ता का बोध)
'खूब' — 'फिल्मी गाने भी खूब गाता था।' (अधिकता और उत्साह का बोध)
'ज़रा' — 'उँगलियाँ ज़रा जोर से हिलीं नहीं कि चाचा जी तुरंत टोकते थे।' (सूक्ष्मता का बोध)
'तुरंत' — 'डर के मारे तुरंत सब कुछ उतार फेंका।' (त्वरित क्रिया का बोध)

उत्तर: 'इतना' हटने से वाक्य साधारण कथन रह जाता है; 'इतना' से कला की अद्भुत शक्ति का विशेष प्रभाव आता है। ऐसे ही — 'बहुत', 'बार-बार', 'खूब', 'ज़रा', 'तुरंत' भी वाक्य में विशेष भाव उत्पन्न करते हैं।

प्रश्नावली 8.7 — पाठ से आगे — कला का संसार

प्रश्न 1

बिरजू महाराज ने कहा — 'कथक की पुरानी परंपरा को तो कायम रखा है। हाँ, उसके प्रस्तुतीकरण में बदलाव किए हैं।' इस कथन को ध्यान में रखते हुए लिखिए कि कथक की प्रस्तुतियों में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं?

हल

बिरजू महाराज द्वारा किए गए परिवर्तन:
पुराने समय में कथाकार कथा के दृश्यों का विस्तृत वर्णन करते थे; अब केवल 'पनघट की गत देखो' कहकर बाकी दर्शकों की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है — यानी कथन संक्षिप्त और संकेतात्मक हो गया।
महाराज ने पिता और चाचाओं की भाव-भंगिमाओं (खड़े होने का अंदाज़) को भी कथक में शामिल किया — इस प्रकार तीनों गुरुओं की शिक्षा को इकट्ठा कर एक नया रूप तैयार किया।
टैगोर, त्यागराज जैसे आधुनिक कवियों की रचनाओं पर कथक रचनाएँ तैयार कीं — इस प्रकार पारंपरिक विषयों के साथ आधुनिक साहित्य को भी जोड़ा।
प्रस्तुति का स्थान बदला — पहले फर्श पर चाँदनी बिछाकर नृत्य होता था और दर्शक चारों ओर बैठते थे; अब मंच पर होता है।
श्रृंगार में परिवर्तन — पहले चंदनलेप और पान से श्रृंगार होता था; अब आधुनिक प्रसाधनों का उपयोग होता है।

उत्तर: संक्षिप्त-संकेतात्मक प्रस्तुति, तीनों गुरुओं की शैलियों का समन्वय, आधुनिक कवियों की रचनाओं पर नई कथक रचनाएँ, मंच पर प्रस्तुति और आधुनिक श्रृंगार — ये प्रमुख परिवर्तन हैं।

प्रश्न 2

लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य में क्या अंतर है? लिखिए।

हल

बिरजू महाराज के अनुसार लोकनृत्य और शास्त्रीय नृत्य में प्रमुख अंतर:
उद्देश्य — लोकनृत्य नाचने वालों के अपने मन बहलाव और संतुष्टि के लिए होता है; शास्त्रीय नृत्य दर्शकों के लिए होता है।
स्वरूप — लोकनृत्य सामूहिक होता है (सभी मिलकर नाचते हैं); शास्त्रीय नृत्य में एक नर्तक अकेला ही काफ़ी होता है।
अवसर — लोकनृत्य दिनभर की मेहनत के बाद थकान दूर करने और मनोरंजन के लिए किया जाता है; शास्त्रीय नृत्य के लिए विशेष आयोजन होता है।
नियम — शास्त्रीय नृत्य में कठोर नियम, परंपरा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है; लोकनृत्य अनौपचारिक है।
उद्भव — लोकनृत्य स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ; जब उसकी खास शैली व रूप निश्चित होता गया, वह शास्त्रीय नृत्य बन गया।

उत्तर: लोकनृत्य — सामूहिक, अनौपचारिक, स्वयं के मनोरंजन के लिए; शास्त्रीय नृत्य — एकल, कठोर नियमबद्ध, दर्शकों के लिए और विशेष प्रशिक्षण आवश्यक।

प्रश्न 3

पाठ में हुरिया गाँव में गाए जाने वाले निम्नलिखित पद का उल्लेख है: "बैरिगया नाला जुलुम जोर, नौ कथक नचावें तीन चोर। जब तबला बोले धीन-धीन, तब एक-एक पर तीन-तीन।" इस पद का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए।

हल

यह पद उस प्रसंग से जुड़ा है जब नौ कथक बैरिगया नाले के पास से गुजर रहे थे और तीन डाकू वहाँ आ पहुँचे।

'बैरिगया नाला जुलुम जोर' — बैरिगया नाला की उस घटना का वर्णन जहाँ अत्याचार (जुलुम) हुआ था।

'नौ कथक नचावें तीन चोर' — जो तीन डाकू (चोर) डराने आए थे, वही कथकों के नृत्य से मंत्रमुग्ध होकर स्वयं नाचने लगे — अर्थात् नृत्य की शक्ति ने डाकुओं को भी वश में कर लिया।

'जब तबला बोले धीन-धीन' — जब तबले की धुन बजती है।

'तब एक-एक पर तीन-तीन' — तब प्रत्येक एक कथक पर तीन-तीन डाकू (चोर) मगन हो गए — अर्थात् नौ कथकों पर तीनों डाकू बारी-बारी से सम्मोहित होते रहे।

यह पद कला की अजेय शक्ति का संदेश देता है — सच्ची कला हिंसा और भय को भी पराजित कर देती है।

उत्तर: तीन डाकुओं ने नौ कथकों को डराना चाहा पर तबले की धुन और नृत्य देखकर वे स्वयं मंत्रमुग्ध हो गए; यह पद कला की अपराजेय शक्ति का वर्णन करता है।

प्रश्नावली 8.8 — साक्षात्कार की रचना

प्रश्न 1

प्रस्तुत 'साक्षात्कार' के आधार पर बताइए — साक्षात्कार से पहले क्या-क्या तैयारियाँ की गई होंगी?

हल

साक्षात्कार से पहले की संभावित तैयारियाँ:
शोध — बिरजू महाराज के जीवन, उनके परिवार (अच्छन महाराज, शंभू महाराज, लच्छू महाराज), उनके घराने (लखनऊ घराना) और उनकी उपलब्धियों (पद्मविभूषण) की जानकारी एकत्र की गई होगी।
कथक की जानकारी — कथक का इतिहास, विभिन्न घराने, भारत के शास्त्रीय नृत्यों के बारे में जानकारी ली गई होगी।
प्रश्न-सूची बनाना — बचपन, गुरु, नृत्य-सीखने की यात्रा, कथक की परंपरा, बदलाव, शिक्षण, खाली समय आदि विषयों पर प्रश्न तैयार किए गए होंगे।
साक्षात्कार की भाषा — बच्चों द्वारा लिए जाने के कारण सरल और आत्मीय प्रश्न तैयार किए गए होंगे।
समय और स्थान तय करना — बिरजू महाराज की अनुमति और उपलब्धता के अनुसार समय और स्थान निश्चित किया गया होगा।

उत्तर: महाराज के जीवन-उपलब्धियों का शोध, कथक के इतिहास की जानकारी, विषयवार प्रश्न-सूची तैयार करना और साक्षात्कार के लिए अनुमति लेना — ये मुख्य तैयारियाँ होंगी।

प्रश्न 2

आप इस साक्षात्कार में और क्या-क्या प्रश्न जोड़ना चाहेंगे?

हल

इस साक्षात्कार में जोड़े जाने योग्य कुछ और प्रश्न:
1. आपके जीवन का सबसे यादगार कथक प्रस्तुति कौन-सी थी और क्यों?
2. विदेशों में कथक प्रस्तुत करते समय किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?
3. आप कथक सीखने वाले बच्चों के लिए क्या संदेश देना चाहेंगे?
4. पद्मविभूषण पुरस्कार मिलने पर आपकी क्या भावनाएँ थीं?
5. क्या कोई ऐसा क्षण आया जब आपने कथक छोड़ने का मन बनाया और फिर क्या हुआ?

उत्तर: यादगार प्रस्तुति, विदेश में चुनौतियाँ, नए सीखने वालों के लिए संदेश, पुरस्कार की अनुभूति और कठिनतम क्षण — ये प्रश्न साक्षात्कार को और समृद्ध बनाते।

प्रश्न 3

यह साक्षात्कार एक सुप्रसिद्ध कलाकार का है। यदि आपको किसी सब्जी विक्रेता, रिक्शा चालक, घरेलू सहायक या सहायिका का साक्षात्कार लेना हो तो आपके प्रश्न किस प्रकार के होंगे?

हल

किसी सब्जी विक्रेता, रिक्शा चालक या घरेलू सहायक का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्न अलग प्रकार के होंगे:
दैनिक जीवन — 'आप प्रतिदिन कितने समय काम करते हैं और क्या यह काम कठिन लगता है?'
पृष्ठभूमि — 'आप यह काम कब से और क्यों कर रहे हैं?'
चुनौतियाँ — 'आपके काम में सबसे बड़ी कठिनाई क्या है?'
संतोष — 'आपके काम में आपको सबसे अधिक संतोष क्या देता है?'
इच्छाएँ — 'आप अपने बच्चों के लिए क्या सपने देखते हैं?'
समाज से अपेक्षा — 'आप चाहते हैं कि समाज आपके काम को किस दृष्टि से देखे?'
इन प्रश्नों में तकनीकी ज्ञान नहीं, बल्कि उनके अनुभव, संघर्ष और मानवीय पक्ष पर ध्यान दिया जाएगा।

उत्तर: दैनिक जीवन, चुनौतियाँ, संतोष, परिवार के सपने और समाज से अपेक्षाओं पर केंद्रित प्रश्न — इनसे उनके मानवीय अनुभव और संघर्ष सामने आएँगे।